सोने-चांदी की कीमतों में भारी गिरावट

नई दिल्ली 14 सितंबर (ए)। विदेशी बाजारों में रही तेजी के बावजूद अधिक भाव पर जेवराती मांग कमजोर पड़ने से दिल्ली सर्राफा बाजार में शुक्रवार को सोना 200 रुपए फिसलकर 31,400 रुपए प्रति दस ग्राम पर आ गया। चांदी भी 250 रुपए लुढ़ककर 37,650 रुपए प्रति किलोग्राम बोली गई। लंदन से मिली जानकारी के अनुसार, अंतरराष्ट्रीय बाजारों में सोना हाजिर 5.10 डॉलर चमककर 1,207 डॉलर प्रति औंस पर पहुंच गया। दिसंबर का अमेरिकी सोना वायदा भी 4.70 डॉलर की मजबूती में 1,212.90 डॉलर प्रति औंस बोला गया। बाजार विश्लेषकों ने बताया कि दुनिया की अन्य प्रमुख मुद्राओं के बास्केट में डॉलर के कमजोर पड़ने से वैश्विक स्तर पर पीली धातु की चमक तेज हुई है। लेकिन, स्थानीय बाजार में महंगे दाम के कारण खुदरा जेवराती मांग कमजोर पड़ने से लगातार दूसरे दिन इसकी चमक फीकी पड़ी है। वैश्विक स्तर पर चाँदी हाजिर 0.05 डॉलर की बढ़त के साथ 14.21 डॉलर प्रति औंस बिकी।

घाटे से उबरने के लिए 50 से अधिक अपार्टमेंट और जमीनें बेचेगी एयर इंडिया

नई दिल्ली 14 सितंबर (ए)। घाटे से जूझ रही सार्वजनिक क्षेत्र की विमानन कंपनी एयर इंडिया अपनी 50 से अधिक रियल्टी संपत्तियों और जमीन को बेचेगी। कंपनी का चालू वित्त वर्ष में इस तरह की संपत्तियों को बेचकर 500 करोड़ रुपए जुटाने का लक्ष्य है। एयरलाइंस ने रियल एस्टेट की उन संपत्तियों को इस बिक्री में फिर से शामिल किया है जो पिछली बार अधिक कीमत की वजह से नहीं बिक सकीं। कंपनी ने इस बिक्री के लिए जिन अपार्टमेंट्स को बोली में शामिल किया है, उनमें मुंबई के बांद्रा, माहिम, खार, कोलाबा, कफ परेड और मलाड क्षेत्र के अपार्टमेंट शामिल हैं। इसके अलावा भूमि पार्सल में कोलकाता, पुणे, भुज, गोवा, ग्वालियर, त्रिवेंद्रम और नाशिक शहर शामिल हैं। जानकारी के मुताबिक इन संपत्तियों की बोली ई-नीलामी कंपनी एमएसटीसी लिमिटेड के द्वारा लगाई जाएगी। आवासीय फ्लैट और जमीन की ई-बोली 12 अक्टूबर तक लगाई जा सकेगी। एयरलाइंस के एक अधिकारी ने बताया कि फरवरी में कंपनी ने ऐसी संपत्तियां बेचकर 30 से 35 करोड़ रुपए जुटाए थे। एयर इंडिया पर फिलहाल 55,000 करोड़ रुपए का कर्ज है जिसमें 21,000-22,000 करोड़ रुपए सिर्फ एयरक्राफ्ट का बकाया है।

थोक महंगाई 4 महीने के निचले स्तर पर, अगस्त में घटकर 4.53प्रतिशत रही

नई दिल्ली 14 सितंबर (ए)। महंगाई के मोर्चे पर अच्छी खबर है, रिटेल महंगाई दर के बाद अब थोक महंगाई दर में भी कमी आई है। अगस्त में थोक महंगाई दर घटकर 4.53 फीसदी रही है। अगस्त में थोक महंगाई 4 महीने के निचले स्तर पर आ गई है। वहीं, जुलाई में थोक महंगाई दर 5.09 फीसदी रही थी। वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय की तरफ से जारी आंकड़ों के मुताबिक अगस्त के दौरान फूड आर्टिकल्स के लिए थोक महंगाई दर -2.16 प्रतिशत से घटकर -4.04 प्रतिशत, प्राइमरी आर्टिकल्स के लिए 1.73 प्रतिशत से घटकर -0.15 प्रतिशत और फ्यूल ऑर्टिकल्स के लिए 18.10 प्रतिशत से घटकर 17.73 प्रतिशत दर्ज की गई है। हालांकि मैन्युफैक्चरिंग प्रोडक्ट्स के लिए यह दर 4.26 प्रतिशत से बढ़कर 4.43 प्रतिशत हो गई है। महीने दर महीने आधार पर अगस्त में आलू की थोक महंगाई दर 74.28 फीसदी से घटकर 71.89 फीसदी रही है। महीने दर महीने आधार पर अगस्त में प्याज की थोक महंगाई दर 38.82 फीसदी से घटकर -26.8 फीसदी रही है। महीने दर महीने आधार पर अगस्त में कोर थोक महंगाई दर 4.8 फीसदी से बढ़कर 5 फीसदी रही है। पैट्रोल-डीजल की कीमतों में हाल के दिनों में हुई बढ़ोतरी के बावजूद महंगाई दर में कमी दर्ज की गई है।

रेलवे जल्द देगा रेल यात्रियों को बड़ी राहत

नई दिल्ली 14 सितंबर (ए)। भारतीय रेलवे जल्द ही रेल यात्रियों को बड़ी राहत दे सकता है। सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक, भारतीय रेलवे 40 ट्रेनों से फ्लेक्सी फेयर पॉलिसी के नियम हटाने की तैयारी में है। इतना ही नहीं, सूत्रों की जानकारी के मुताबिक जिन 102 गाड़ियों में अभी यह पॉलिसी बनी रहेगी उनमें गाड़ी छूटने से कुछ समय पहले की जाने वाली बुकिंग में रेलवे 50 प्रतिशत तक का डिस्काउंट भी दे सकता है। रेलवे ने सितंबर 2016 में फ्लेक्सी फेयर पॉलिसी को लागू किया था, इस नियम को 44 राजधानी, 46 शताब्दी और 52 दुरंतो गाड़ियों में लागू किया गया था लेकिन इस नियम की वजह से कई बार रेलगाड़ी का टिकट हवाई जहाज के टिकट से भी महंगा हो जाता है। जिन ट्रेनों में 60 फीसदी से कम बुकिंग होती है, उनके लिए एक ग्रेडेड डिस्काउंट सिस्टम रखा जा रहा है। इसके तहत 20 फीसदी तक का डिस्काउंट उपलब्ध होगा। सूत्रों के मुताबिक फ्लेक्सी फेयर स्कीम को उन ट्रेनों से हटाया जा रहा है, जिनका यूटिलाइजेशन 50 फीसदी है।

कच्चे तेल की कीमतें नरम, मगर भारत में फिर भी बढ़ रहे पेट्रोल-डीजल के दाम

नई दिल्ली 14 सितंबर (ए)। अमरीका में कच्चे तेल के भंडार में कमी आने के बावजूद विदेशी बाजार में आज कच्चे तेल के दाम में थोड़ी नरमी आई मगर भारत में एक बार फिर पैट्रोल और डीजल की कीमतों में वृद्धि हो गई। तेल बाजार के जानकारों के अनुसार तेल उत्पादक देशों के समूह ओपेक द्वारा अगले साल तेल की मांग कमजोर रहने की आशंका जताने के चलते कीमतों में नरमी आई है, मगर यह नरमी जारी रहने की संभावना कम है।

जानकारों की मानें तो अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल के दाम में तेजी या नरमी का असर पैट्रोल या डीजल की कीमतों पर करीब 2 सप्ताह बाद दिखता है। कच्चा तेल बुधवार को मई के बाद के सबसे ऊंचे स्तर पर चला गया था जो आगे आपूर्ति कम रहने की

संभावनाओं से प्रेरित था। ऊर्जा विशेषज्ञ नरेंद्र तनेजा के अनुसार वैश्विक स्तर पर उथल-पुथल रहने के कारण ओपेक की ओर से आशंका जताई गई है कि अगले साल तेल की मांग कम रह सकती है इसलिए कीमतों में थोड़ी कमजोरी आई है।

ब्रेंट क्रूड का नवम्बर वायदा आज इंटरकॉन्टिनैंटल एक्सचेंज पर 0.58 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 79.28 डॉलर प्रति बैरल पर बना हुआ था। इससे पहले बुधवार को ब्रेंट क्रूड 80 डॉलर प्रति बैरल से ऊपर चला गया था। अमरीकी लाइट क्रूड वैस्ट टैक्सास इंटरमीडिएट यानी डब्ल्यू.टी.आई. 0.67 प्रतिशत की नरमी के साथ 69.90 डॉलर प्रति बैरल पर बना हुआ था। इससे पहले डब्ल्यू.टी.आई. बुधवार को 70 डॉलर के पार चला गया था। घरेलू वायदा बाजार मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज पर सितम्बर डिलीवरी कच्चा तेल वायदा बुधवार को 31 रुपए यानी 0.61 प्रतिशत की बढ़त के साथ 5,075 डॉलर प्रति बैरल पर बंद हुआ, जबकि दैनिक कारोबार के दौरान वायदे में 5,140 रुपए प्रति बैरल का उछाल आया।

पहुंचे नई रिकॉर्ड ऊंचाई पर

पैट्रोल-डीजल के दाम नई रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच गए हैं। रुपए में आ रही कमजोरी और अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तले की कीमतों में बढ़ोतरी की वजह से तेल कंपनियां लगातार पैट्रोल और डीजल की कीमतों में बढ़ोतरी करती जा रही हैं। दिल्ली में डीजल 22 पैसे और पैट्रोल 28 पैसे हुआ महंगा हुआ है। दिल्ली में आज पैट्रोल की कीमत बढ़कर 81.28 रुपए प्रति लीटर पर पहुंच गई हैं। डीजल भी 73.30 रुपए प्रति लीटर बिक रहा है।

देश की सबसे बड़ी तेल विपणन कंपनी इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन से प्राप्त जानकारी के अनुसार, दिल्ली में पैट्रोल की कीमत 81.28 रुपए प्रति लीटर पर पहुंच गई है। मुंबई में यह 88.67 रुपए प्रति लीटर, कोलकाता में 83.14 रुपए प्रति लीटर, हरियाणा में 81.87 रुपए प्रति लीटर, हिमाचल प्रदेश में 82.33 रुपए प्रति लीटर और चेन्नई में पैट्रोल 84.49 रुपए प्रति लीटर मिल रहा है।

डीजल की कीमतें

वहीं डीजल की बात करें, तो दिल्ली में यह 73.30 रुपए प्रति लीटर हो गया है।

हर्षद मेहता घोटाले का खुलासा करने वाले ऑडिटर करेंगे आम्रपाली का फॉरेंसिक ऑडिट

नई दिल्ली 14 सितंबर (ए)। उच्चतम न्यायालय ने बुधवार को कहा कि आम्रपाली समूह की कंपनियों और उनके निदेशकों की संपत्तियों की फॉरेंसिक ऑडिट के लिए उसने जिन दो लेखा परीक्षकों को नियुक्त किया है वह काफी 'अनुभवी एवं प्रतिष्ठित हैं।' शीर्ष अदालत ने कहा कि इनमें से एक ने तो हर्षद मेहता घोटाले का पर्दाफाश किया था।

क्या था मामला: शेयर ब्रोकर हर्षद मेहता को 1992 में करीब 4,500 करोड़ के शेयर घोटाले के संबंध में कई वित्तीय अपराधों में आरोपी बनाया गया था। न्यायमूर्ति अरुण मिश्रा और न्यायमूर्ति यू यू ललित की पीठ ने आम्रपाली समूह की कंपनियों की फॉरेंसिक ऑडिट के लिए भाटिया एंड कंपनी के रवि भाटिया एवं शार्प एंड कंपनी के पवन कुमार अग्रवाल को नियुक्त किया है।

46 कंपनियों के दस्तावेजों की फॉरेंसिक जांच: पीठ ने जोतिन्द्र स्टील सहित आम्रपाली समूह की सभी 46 कंपनियों के 2008 से लेकर अब तक के बैंक खातों, बही खातों, वार्षिक लेखा-जोखा सहित सभी दस्तावेजों की फॉरेंसिक जांच के लिए उपलब्ध कराने के आदेश दिए हैं।

जड़ी-बूटियों और सुगंधित पौधों की खेती से आमदनी बढ़ा रहे हैं किसान

नई दिल्ली 14 सितंबर (ए)। भारतीय किसानों का एक छोटा सा समूह 3 लाख रुपये प्रति एकड़ तक की कमाई कर रहा है। इस आंकड़े की अहमियत तब समझ में आती है जब आप गेहूं या धान की खेती करने वाले किसानों की कमाई से इसकी तुलना करें, जो 30,000 रुपये प्रति एकड़ से भी कम है। इन किसानों की इस शानदार कमाई के पीछे कुछ जड़ी-बूटियां और सुगंधित पौधे हैं, जिनका इस्तेमाल आयुर्वेदिक दवाइयां और पर्सनल केयर प्रॉडक्ट बनाने में होता है। इन आयुर्वेदिक दवाओं और पर्सनल केयर प्रॉडक्ट्स को डाबर, हिमालया, नैचरल रेमिडीज और पतंजलि जैसी कंपनियां बेचती हैं।

इनमें से कई जड़ी-बूटियों के नाम विदेशी हैं। शहरी उपभोक्ताओं के लिए अतीश, कुठ, कुटकी, करंजा, कपिकाचु और शंखपुष्पी जैसी औषधियों के नाम की शायद ही कोई अहमियत हो, लेकिन इन्होंने कई किसानों की कमाई के जरिए

जिंदगी बदल दी है। एक आकलन के मुताबिक, देश में हर्बल प्रॉडक्ट्स का मार्केट करीब 50,000 करोड़ रुपये का है, जिसमें सालाना 15 प्रतिशत की दर से ग्रोथ हो रही है। जड़ी-बूटी और सुगंधित पौधों के लिए प्रति एकड़ बुआई का रकबा अभी भी इसके मुकाबले काफी कम है। हालांकि यह सालाना 10 पर्सेंट की दर से बढ़ रहा है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, देश में कुल 1,058.1 लाख हेक्टेयर में फसलों की खेती होती है। इनमें सिर्फ 6.34 लाख हेक्टेयर में जड़ी-बूटी और सुगंधित पौधे बोए गए हैं। अतीश जड़ी-बूटी को उगानेवाले एक किसान को आसानी से 2.5 से 3 लाख रुपये प्रति एकड़ की आमदनी हो जाती है।

आईएएमएआई का अनुमान, 2018 में 2.37 लाख करोड़ का होगा डिजिटल कारोबार

नई दिल्ली 14 सितंबर (ए)। इंटरनेट और मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया (आईएएमएआई) ने कहा कि इस वर्ष दिसंबर के अंत तक 2018 तक भारत में डिजिटल व्यापार 2.37 लाख करोड़ रुपए तक पहुंचने की उम्मीद है जिसकी वजह यात्रा, ई-कॉमर्स और उपयोगिता सेवा जैसे क्षेत्रों में अच्छी वृद्धि का होना होगा। इस औद्योगिक निकाय ने आईएमआरबी कंटार के साथ अपनी रिपोर्ट में कहा है कि वर्ष 2011 से 2017 के बीच डिजिटल व्यापार साल दर साल 34 फीसदी की दर से बढ़ा। दिसंबर 2017 को समाप्त वर्ष में 2.04 लाख करोड़ रुपए था। रिपोर्ट में कहा गया है, इस वर्ष दिसंबर 2018 तक यह 2,37,124 करोड़ रुपए तक

पहुंचने का अनुमान है।

ऑनलाइन यात्रा उद्योग की हिस्सेदारी: रिपोर्ट के अनुसार, इस वृद्धि में ऑनलाइन यात्रा उद्योग का डिजिटल वाणिज्य बाजार की 54 प्रतिशत हिस्से (1.10 लाख करोड़ रुपए) की हिस्सेदारी है। यात्रा श्रेणी के भीतर, घरेलू हवाई टिकट और रेलवे बुकिंग शीर्ष योगदानकर्ताओं में रही है, जबकि बस/कैब बुकिंग का योगदान 5,174 करोड़ रुपए का है। गैर-यात्रा खंड में, ई-टेल का योगदान 73,845 करोड़ रुपए का है जिसके बाद उपयोगिता सेवाओं का योगदान 10,201 करोड़ रुपए और शादीविवाह और वर्गीकृत का योगदान 3,68 9 करोड़ रुपए का है।

9,000 करोड़ तक पहुंचा

ऑनलाइन सेवा बाजार: अन्य ऑनलाइन सेवा बाजार- जिसमें मनोरंजन, ऑनलाइन किराने और ऑनलाइन खाद्य वितरण के लिए ऑनलाइन बुकिंग शामिल है - 6,060 करोड़ रुपए तक पहुंच गया है। इसमें कहा गया है, ऑनलाइन किराने की डिलीवरी इस खंड में 2,200 करोड़ रुपए के बाजार मूल्य के साथ शीर्ष योगदानकर्ता है। यह पूरा का पूरा खंड दिसंबर 2018 में 7,800 करोड़ रुपए हो जाने की उम्मीद है। रिपोर्ट में कहा गया है कि शहरी भारत में दिसंबर 2017 को 29.5 करोड़ लोग ऑनलाइन थे। मोबाइल इंटरनेट सेवाओं के मूल्य में तेज गिरावट के साथ ऑनलाइन उपयोगकर्ताओं की संख्या और ऑनलाइन गतिविधि और जुड़ाव के स्तर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

माल्या को छोटी-सी गलती ने कर दिया बर्बाद

नई दिल्ली 14 सितंबर (ए)। मोदी सरकार के लिए गले का फांस बन चुके भगोड़े विजय माल्या के बयान के बाद भारतीय राजनीति में घमासान मचा हुआ है। विजय माल्या ने बुधवार को कहा था कि वह भारत से भागने से पहले वित्त मंत्री से मिला था। कभी भारत के मशहूर कारोबारियों में शुमार विजय माल्या के बर्बादी की कहानी पूरी तरह फिल्मी है। कहा जाता है कि फिल्मी घराने से लेकर कॉरपोरेट लॉबी और खेल जगत में भी माल्या का सिक्का चलता था। जानें, आखिर किस गलती की वजह से माल्या का सब कुछ बर्बाद हो गया।

2005 में शुरू हुई थी किंगफिशर एयरलाइन्स: प्रीमियम सेवाओं के लिए जानी जाने वाली किंगफिशर एयरलाइन्स की स्थापना वर्ष 2003 में हुई थी। इसका स्वामित्व विजय माल्या की अगुआई वाले यूनाइटेड ब्रेवरीज ग्रुप के पास था। 2005 में इसका कमर्शियल ऑपरेशन शुरू हुआ। कुछ समय के भीतर ही यह एविएशन सेक्टर की बड़ी कंपनी बन गई। उस दौर में प्रीमियम सेवाओं में इसका कोई जोड़ नहीं

था। ऐसे में, कंपनी ने देश की एक लो कॉस्ट (किफायती) एविएशन कंपनी खरीदने की कोशिशें शुरू कर दी। यह कोशिश 2007 में जाकर कामयाब हुई, लेकिन इस तरह उन्होंने अपनी जिंदगी की सबसे बड़ी गलती की ओर कदम बढ़ा दिए।

2007 में खरीदी थी एयर डेक्कन: 2007 में माल्या ने देश की पहली लो कॉस्ट एविएशन कंपनी एयर डेक्कन का अधिग्रहण किया और इसके लिए 30 करोड़ डॉलर की भारी रकम खर्च की, जो उस समय लगभग 1,200 करोड़ रुपए (2007 में 1 डॉलर लगभग 40 रुपए के बराबर था) के बराबर थी।

इस सौदे से माल्या को फायदा भी हुआ और 2011 में किंगफिशर देश की दूसरी बड़ी एविएशन कंपनी बन गई। हालांकि, कंपनी एयर डेक्कन को खरीदने के पीछे के लक्ष्य को हासिल नहीं कर पाई और उसकी ऊंची कॉस्ट की समस्या जस की तस बनी रही।

इस तरह फेल हो गई माल्या की योजना: माल्या भले ही एयर डेक्कन को खरीदने में कामयाब रहे, लेकिन उनकी इसके माध्यम से किंगफिशर को मजबूती देने की स्ट्रैटजी बुरी तरह फेल हो गई। बाद में माल्या ने दोनों एयरलाइन्स का विलय कर दिया और फिर एयर डेक्कन का नाम बदलकर किंगफिशर रेड हो गया, जो प्रीमियम सेवाओं के साथ ही लो कॉस्ट सेवाएं भी देने लगी। इस प्रकार कंपनी एक ही ब्रांड किंगफिशर के अंतर्गत लो कॉस्ट और प्रीमियम सेवाएं देने लगी। भारत में लो कॉस्ट एविएशन मॉडल को लाने वाले और एयर डेक्कन के संस्थापक कैप्टन गोपीनाथ ने एक मीडिया रिपोर्ट में कहा था, माल्या का एक ब्रांड का फैसला संभावित तौर पर अच्छा था। लेकिन उन्हें सभी घरेलू सेवाओं को लो कॉस्ट और अंतरराष्ट्रीय सेवाओं को प्रीमियम रखना चाहिए था। गोपीनाथ के मुताबिक, एक ब्रांड की दोनों सेवाओं में ज्यादा अंतर भी नहीं था, बस तभी से समस्याएं पैदा होने लगीं। लो कॉस्ट सर्विस की ओर जाने लगे लोग गोपीनाथ के मुताबिक, इस तरह अप्रत्यक्ष रूप से किंगफिशर की दोनों सर्विसेस के बीच अपने मौजूदा कस्टमर बेस को छीनने के लिए होड़ होने लगी। इससे किंगफिशर पर दोहरी मार पड़ी। पहली, किंगफिशर के इकोनॉमी पैसेंजर्स ने किंगफिशर रेड की ओर देखना शुरू कर दिया, जहां सुविधाएं काफी हद तक समान थीं, लेकिन कॉस्ट कम थी।

रुपये में लगातार गिरावट के चलते दिवाली पर बढ़ सकती हैं मोबाइल फोन्स की कीमतें

नई दिल्ली 14 सितंबर (ए)। इस बार दिवाली के मौके पर हैंडसेट निर्माता कंपनियां नए मोबाइन फोन्स की कीमतें कम से कम 7 फीसदी बढ़ा सकती हैं। खासकर फीचर फोन और कम कीमतों वाले स्मार्टफोन बनाने वाली कंपनियों को यह कदम डॉलर के मुकाबले रुपये में लगातार गिरावट की वजह से उठाना पड़ सकता है। बताया जा रहा है कि ज्यादातर कंपनियों के पास डिवाइसों और कंपोनेंट्स का जो स्टॉक है, वो सितंबर के आखिर या अक्टूबर की शुरुआत में खत्म हो जाएगा। ऐसे में नई इन्वेंटरी को रुपये और डॉलर के नए स्तर का सामना करना होगा, जिसके चलते दामों में उछाल आ सकता है। जानकारों की मानें तो डॉलर के मुकाबले रुपये का गिरना जारी रहा तो अक्टूबर-नवंबर में हैंडसेट इंडस्ट्री पर भी इसका असर दिखना शुरू हो जाएगा। जापान की पैनासोनिक में मोबिलिटी हेड पंकज राणा ने बताया, फेस्टिवल सीजन में इसका (रुपये के कमजोर होने का) और डीजल की कीमतों में बढ़ोतरी का ब्रिकी पर प्रभाव पड़ सकता है। (ब्रिकी में) कुछ हद तक गिरावट आएगी। ऑनलाइन प्लेयर डिस्काउंट के जरिए इसकी भरपाई की कोशिश कर सकते हैं, मगर कुछ नकारात्मक प्रभाव तो पड़ेगा। डॉलर के मुकाबले रुपया रेकॉर्ड निचले स्तर पर है। अमेरिकी डॉलर के सामने रुपया इस साल 12 फीसदी कमजोर होकर 72 के पार चला गया है। सरकार इसके लिए कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि सहित बाहरी कारणों को जिम्मेदार बता रही है। हालांकि, पिछले कुछ सालों में रुपया दूसरे कई देशों की करंसी के मुकाबले काफी मजबूत हुआ है। डॉलर के मुकाबले रुपये में गिरावट आई है, लेकिन यह सबसे कमजोर नहीं है। यदि पिछले 5 साल का डेटा देखें तो पता चलता है कि रुपया दूसरी मुद्राओं के मुकाबले मजबूत हुआ है। हालांकि, अन्य करंसी के मुकाबले डॉलर का प्रभाव अधिक होता है, क्योंकि अधिकतर अंतरराष्ट्रीय सौदे डॉलर में ही होते हैं। इस बीच डॉलर अधिकतर देशों की करंसी के मुकाबले मजबूत हो रहा है।

ब्रेव का आरोप, Privacy का उल्लंघन कर विज्ञापन थोप रहा गूगल

नई दिल्ली 14 सितंबर (ए)। गूगल के खिलाफ विज्ञापन दिखने के दौरान निजता के उलंघन के मामले में शिकायत दर्ज करवाई गई है। यह शिकायत मॉजिला ब्राउजर के सह संस्थापक ब्रेंडन आइश की डिजटल विज्ञापन को ब्लॉक करने वाली कंपनी ब्रेव ने करवाई है। इसके साथ ही ब्रेव ने अपने प्लेटफार्म पर यूरोप में गूगल के सर्च इंजन को ब्लाक करके फ्रांस और जर्मनी में उसके प्रतिद्वंदी सर्च इंजन क्रांट को प्राथमिकता दी है। ब्रेंडन आईश गूगल के खिलाफ यूरोप में इसी साल लागू हुए जनरल डाटा प्रटेक्शन रेगुलेशन के तहत करवाई करवाने की मांग कर रही है।

डिजिटल विज्ञापन ब्लॉक करने वाले सॉफ्टवेयर ब्रेव ने अपनी शिकायत में गूगल पर लोगों का निजी जानकारी विज्ञापन देने वाली कंपनियों के हित में इस्तेमाल करने का आरोप लगाया है। गूगल पर आरोप है कि वह यूजर्स द्वारा ब्राउज की जाने वाली वेबसाइट और एप्लिकेशन को ट्रेक करता है और यूजर की ब्राउजिंग हेबिट के अनुसार उसके फोन या कंप्यूटर पर विज्ञापन थोप कर दिखाया जाता है। शिकायत में लिखा गया है कि यूजर्स के मोबाइल पर विज्ञापन दिखाने के अपने तरीके से गूगल और ऐडटेक इंडस्ट्री बड़े पैमाने पर

डाटा प्रटेक्शन नियमों का उलंघन कर रही है। नियमों का यह उलंघन रियाल टाइम बिडिंग (ओपन आर टी बी) और अथ्रजाईड बायर प्रक्रिया के तहत हो रही है। शिकायत में गूगल पर आरोप है कि वह इस प्रक्रिया के तहत यूजर के राजनीतिक रुझान, जातीयता, सैक्स को लेकर यूजर के रुझान और अन्य संवेदनशील जानकारी को विज्ञापन दाता की जरूरत के अनुसार इस्तेमाल करता है और यह निजता का उलंघन है

क्या है GDPR: आई टी एन सॉलिसिटर लंदन के पार्टनर रवि नाइक के मुताबिक, जनरल डाटा प्रटेक्शन रेगुलेशन यूरोप में इसी साल 18 मई को लागू हुआ है और इसमें नियमों के उलंघन पर भारी जुमाने का प्रावधान है और दोषी पाए जाने पर किसी भी कंपनी को उसकी वैश्विक टर्न ओवर का चार फीसदी तक का जुर्माना हो सकता है लिहाजा यदि गूगल इस मामले में दोषी पाया जाता है तो कंपनी को एक अन्य भारी भरकम जुमाने का सामना करना पड़ेगा। इसके साथ ही गूगल के खिलाफ फैसला आने की स्थिति में डाटा आधारित विज्ञापन को लेकर भी सवाल खड़े होंगे क्योंकि डिजिटल मार्किटिंग इंडस्ट्री इसी पर टिकी हुई है और किसी भी विपरीत फैसले के इंटरनेट इंडस्ट्री पर दूरगामी प्रभाव देखने को मिलेंगे। इसी साल जुलाई महीने में गूगल को यूरोपियन कमीशन ने एंटी रस्ट कानून के उलंघन के आरोप में 5 बिलियन डॉलर का जुरमाना लगाया था। गूगल पर फोन निर्माताओं के साथ मिल कर अपने ऐप्लिकेशन के प्रमोशन और यूजर्स के लिए बेहतरीन विकल्प को रोकने के आरोप लगे थे।